सूरह — एक कहानी

सूरह अल-काफ़िरून

मुनकिरीन

पूरा सफ़र — छह आयतें, और कोई गुज़ारिश नहीं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 109 • 6 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़ुल या अय्युहल्-काफ़िरून
1. कह दीजिए: ऐ मुनकिरो!

ला अ'बुदु मा त'बुदून
2. मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी तुम करते हो।

व ला अन्तुम 'आबिदूना मा अ'बुद
3. और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं करता हूँ।

व ला अना 'आबिदुम्-मा 'अबत्तुम
4. और न मैं उसका इबादत-गुज़ार बनूँगा जिसकी तुम इबादत करते रहे।

लकुम दीनुकुम व लिय दीन
6. तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, और मेरे लिए मेरा दीन।

बरा-अतुम्-मिनश्-शिर्क
नबी ﷺ ने इसे 'शिर्क से बेज़ारी' फ़रमाया।

एक समझौते की पेशकश

बेटा, यह सूरह एक ख़ास पेशकश के जवाब में नाज़िल हुई — और उस पेशकश को समझ लेना ही पूरी सूरह की कुंजी है।

क़ुरैश के सरदारों ने नबी ﷺ के ख़िलाफ़ सब कुछ आज़मा लिया था: मज़ाक़, बायकाट, उनके मानने वालों पर तशद्दुद, दौलत और बादशाहत की पेशकश। कुछ काम न आया। तो वो एक ज़्यादा चालाक चीज़ ले कर आए — एक मुज़ाकरात।

उन्होंने कहा, जैसा रिवायतों में आता है: ऐ मुहम्मद, एक साल हम उसकी इबादत करते हैं जिसकी आप करते हैं, और एक साल आप उनकी करते हैं जिनकी हम करते हैं। या एक दूसरी रिवायत में: कुछ अरसे हमारे माबूदों की इबादत कर लीजिए, और कुछ अरसे हम आपके रब की कर लेते हैं — फिर जो बेहतर निकले, हम सब उसी को मान लेंगे।

बेटा, सुनिए यह कितना मा'क़ूल लगता है। किसी को हारना नहीं पड़ता। सबको इज़्ज़त मिल जाती है। यह रवादारी है, ता'आवुन है, दोनों रास्तों का एक इंसाफ़ पसंद तजुर्बा है। और बदले में ज़ुल्म ख़त्म हो जाता, बायकाट उठ जाता, और नबी ﷺ अपने ही शहर में मुअज़्ज़ज़ हो जाते।

यह उनकी दी हुई सबसे ख़तरनाक पेशकश थी — क्योंकि तशद्दुद तो मोमिन को सिर्फ़ मज़बूत करता है, मगर समझौता उसे घोल देता है।

और अल्लाह का जवाब उतरा: छह आयतें, और उनमें मुज़ाकरात का एक लफ़्ज़ भी नहीं।

छह आयतें, पूरी वज़ाहत

'क़ुल या अय्युहल्-काफ़िरून — कह दीजिए: ऐ मुनकिरो!'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि सूरह का आग़ाज़ 'क़ुल' से होता है — कह दीजिए। यह हुक्म है कि इसे खुल कर एलान कीजिए, दिल में सोचने की बात नहीं। और यह ख़िताब उन मख़्सूस मुख़ालफ़ीन से था जो जान-बूझ कर पैग़ाम रद्द कर चुके थे — क़ुरआन ख़ुद कहीं और हुक्म देता है कि लोगों से 'बेहतरीन अंदाज़ में' बात कीजिए, और इस उम्मत को उन लोगों के साथ अद्ल और एहसान का हुक्म दिया गया है जो उससे नहीं लड़ते।

'ला अ'बुदु मा त'बुदून — मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी तुम करते हो — व ला अन्तुम 'आबिदूना मा अ'बुद — और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं करता हूँ — व ला अना 'आबिदुम्-मा 'अबत्तुम — और न मैं उसका इबादत-गुज़ार बनूँगा जिसकी तुम इबादत करते रहे — व ला अन्तुम 'आबिदूना मा अ'बुद — और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं करता हूँ।'

बेटा, चार आयतें इनकार की। और लोग पूछते हैं: यह तिकरार क्यों?

उलमा ने कई जवाब दिए, और सबसे इत्मीनान-बख़्श जवाब यह है: यह तिकरार ज़माने को समेट लेती है। दो आयतें हाल की बात करती हैं — मैं अभी उसकी इबादत नहीं करता जिसकी तुम करते हो — और दो मुस्तक़बिल और तय-शुदा हक़ीक़त की

— और न कभी करूँगा। हर दरवाज़ा बंद: न अभी, न बाद में, न एक साल के लिए, न तजुर्बे के तौर पर, न ख़ुश-अख़लाक़ी के इज़हार के लिए।

बेटा, क़ुरैश ने एक आज़माइशी मुद्दत तजवीज़ की थी। जवाब ने आज़माइशी मुद्दत का तसव्वुर ही ख़त्म कर दिया।

और एक और बात नोटिस कीजिए: यह सूरह बहस नहीं करती। यह नहीं कहती कि 'तुम्हारे बुत पत्थर हैं' या 'तुम्हारे बाप ग़लती पर थे' — हालाँकि क़ुरआन ये बातें कहीं और कहता है। यहाँ वो सिर्फ़ एलान करती है। क्योंकि कुछ लम्हे बहस के होते हैं, और कुछ लम्हे ऐसे होते हैं जहाँ सही जवाब सिर्फ़ एक साफ़ लकीर है।

तुम्हारा दीन तुम्हें, मेरा मुझे

'लकुम दीनुकुम व लिय दीन — तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, और मेरे लिए मेरा दीन।'

बेटा, यह आख़िरी आयत क़ुरआन की सबसे ज़्यादा नक़ल की जाने वाली आयतों में से है — और सबसे ज़्यादा ग़लत समझी जाने वाली भी, दो मुख़्तलिफ़ सिम्तों में।

कुछ लोग इसे यह समझते हैं कि सारे मज़हब बराबर दुरुस्त हैं। बेटा, यह वो नहीं कह रही। इससे पहले वाली चार आयतों ने अभी अभी दो इबादतों के दरमियान मुकम्मल अलगाव का एलान किया है। मतलब यह है: तुम्हारा अपना रास्ता है और उसके अपने नतीजे; मेरा अपना है और उसके अपने। यह फ़र्क़ का बयान है, बराबरी का नहीं।

दूसरे लोग इसे दुश्मनी समझते हैं — गोया यह कह रही हो कि 'मुझसे दूर रहो'। मगर लहजा देखिए: इसमें कोई धमकी नहीं, कोई बद-दुआ नहीं, किसी तशद्दुद की दावत नहीं। यह एक पुर-सुकून, बा-वक़ार लकीर खींचना है। और यह वही नबी ﷺ हैं जो उन्हीं लोगों के दरमियान रहते थे, उनसे तिजारत करते थे, उनकी अमानतें वापस करते थे, और बाद में फ़तह-ए-मक्का के दिन उन्हें माफ़ कर दिया।

बेटा, तो यह आयत हमें देती क्या है? यह हमें मिले-जुले माहौल में मुसलमान का दो-तरफ़ा अंदाज़ देती है: अक़ीदे में सख़्ती, और लोगों के साथ हुस्न-ए-सुलूक।

आप अपना अक़ीदा पसंद आने के लिए धुँधला नहीं करते। और आप यह साबित करने

के लिए सख़्त नहीं बनते कि आप मज़बूत हैं। इस सूरह का नबी ﷺ की ज़िंदगी में मक़ाम ख़ुद साबित करता है कि दोनों एक साथ मुमकिन हैं: उन्होंने उनका दीन मुकम्मल तौर पर रद्द किया, और उन्हीं के शहर में सबसे ज़्यादा अमानतदार इंसान बने रहे।

बेटा, यह आपके लिए बहुत अमली बात है। आपके दफ़्तर में, आपके ख़ानदान में, आपके हल्क़े में — दबाव आएगा कि थोड़ा नर्म कर लीजिए, 'बस थोड़ा सा शामिल हो जाइए', अपनी नमाज़ को लचकदार समझ लीजिए, उस बात पर भी हँस दीजिए जिस पर नहीं हँसना चाहिए, दीन का वो हिस्सा छोड़ दीजिए जो दूसरों को असहज करता है। इस सूरह का जवाब इन सबके लिए है, और वो इतना छोटा है कि याद रखा जा सके: लकुम दीनुकुम व लिय दीन।

क़ुरआन का चौथाई हिस्सा

बेटा, अब मैं आपको बताता हूँ कि नबी ﷺ इस सूरह के साथ क्या सुलूक करते थे, क्योंकि इससे इसकी अहमियत खुल जाती है।

आप ﷺ ने फ़रमाया कि सूरह अल-काफ़िरून क़ुरआन के चौथाई हिस्से के बराबर है। क्यों? क्योंकि क़ुरआन का पैग़ाम चंद बड़े उन्वानों में समेटा जा सकता है — तौहीद, शिर्क का इनकार, आख़िरत, और अहकाम — और यह सूरह उनमें से एक को मुकम्मल तौर पर तय कर देती है।

आप ﷺ इसे सूरह अल-इख़्लास के साथ तवाफ़ के बाद की दो रकअतों में, फ़ज्र की दो सुन्नतों में, और वित्र में पढ़ा करते थे। बेटा, जोड़ी ग़ौर कीजिए: अल-काफ़िरून और अल-इख़्लास। एक एलान करती है कि हम किसकी इबादत नहीं करते; दूसरी एलान करती है कि हम किसकी करते हैं। इनकार और इक़रार — 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के अपने दो हिस्से: कोई माबूद नहीं (इनकार), सिवाए अल्लाह के (इक़रार)।

और आप ﷺ ने एक सहाबी को सोने के वक़्त सूरह अल-काफ़िरून पढ़ने की तालीम दी, और फ़रमाया: 'यह शिर्क से बेज़ारी है।' बेटा, सोचिए कि हर दिन का इख़्तिताम इसी पर हो — सोने से पहले ज़ुबान पर आख़िरी अल्फ़ाज़ ये साफ़ एलान हों कि आपकी

बंदगी सिर्फ़ अल्लाह की है।

तो बेटा, इसका अमली नतीजा यह लीजिए। आज रात सोने से पहले यह सूरह पढ़िए। और जब भी आपको यह कशिश महसूस हो कि किसी ऐसी चीज़ को हल्का कर दें जिसे आप सच जानते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि सब लोग आराम में रहें — तो वो पेशकश याद कीजिए जो मक्का में की गई थी, तारीख़ की सबसे मा'क़ूल सुनाई देने वाली पेशकश — और वो छह आयतें जिन्होंने उसका जवाब दिया।

इस सूरह से क्या सीखा

1. समझौता ईमान के लिए ज़ुल्म से ज़्यादा ख़तरनाक है — तशद्दुद मोमिन को मज़बूत करता है, मिलावट उसे घोल देती है।

2. कुछ चीज़ों पर बात नहीं होती — 'एक साल के लिए' और तजुर्बे के तौर पर भी नहीं।

3. तिकरार हर दरवाज़ा बंद कर देती है: न अभी, न बाद में, न आधा अधूरा।

4. 'लकुम दीनुकुम' फ़र्क़ का बयान है, यह नहीं कि सारे रास्ते बराबर हैं।

5. अक़ीदे में सख़्ती और लोगों के साथ बेहतरीन सुलूक — दोनों साथ चलते हैं: उन्होंने उनका दीन रद्द किया और उन्हीं में 'अल-अमीन' बने रहे।

6. अल-काफ़िरून और अल-इख़्लास एक ही एलान के दो हिस्से हैं: हम क्या रद्द करते हैं, और किसका इक़रार करते हैं।

7. सोने से पहले इसे पढ़िए — रोज़ाना शिर्क से बेज़ारी का एलान।

या अल्लाह, हमारी बंदगी ख़ालिस आपकी रखिए, हमें सख़्ती के बग़ैर मज़बूत बनाइए, और साफ़ तौहीद पर हमारा ख़ात्मा फ़रमाइए। आमीन।